प्रकाशन तिथि : 15 अप्रेल, 2022
प्रेषण तिथि : 19 अप्रेल, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 03 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

सुख का उपाय ईश्वर की ओर मुड़ना है : संरक्षक श्री

हम उस भावना को समझ नहीं सकते जो किसी सैनिक के हृदय में शहीद होने के अवसर पर होती है। उस समय, जो तपस्वी लोग साधना में रत रहते हुए समाधि की अवस्था में पहुंचते हैं वैसी ही स्थिति एक सैनिक की होती है। वह उस समय अपनी आत्मा में खोया हुआ होता है। उसको केवल राष्ट्र दिखाई देता है, उसकी सीमा दिखाई देती है। आसपास में क्या हो रहा है यह दिखाई नहीं देता। यही समाधि की अवस्था होती है, यही धारणा की, ध्यान की अवस्था होती है। तपस्वी बने बिना, साधक बने बिना एक शहीद की आत्मा की आवाज को हम पहचान नहीं पाते। हर

शहीदों के परिजनों प्रमाण-पत्र सौंपते हुए।

साल यह पुनरावृत्ति होती है, किसी निश्चित स्थान पर शहीद को याद किया जाता है लेकिन हम कभी यह अनुभव नहीं करते कि यहां आने के बाद में क्या मेरे अंतर में कोई स्फूर्णा हुई, कोई बदलाव हुआ? यह वही व्यक्ति कर सकता है जो सदैव परमेश्वर को याद रखता है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

जयपुर की संभागीय बैठक संघशक्ति में संपन्न

5 अप्रैल को जयपुर संभाग के स्वयंसेवकों का स्नेह मिलन केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सानिध्य में संपन्न हुआ। माननीय संघप्रमुख श्री ने स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए कहा कि हीरक जयंती के पश्चात समाज की आशाएं संघ के प्रति बहुत अधिक बढ़ गई हैं जिस कारण प्रत्येक स्वयंसेवक को पहले से अधिक जिम्मेदारी पूर्वक सक्रिय होकर संघ को समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना है। उन्होंने सभी स्वयंसेवकों को भिखारी की आत्मकथा पुस्तक के 'तुम मेरे सहयोगी हो' प्रकरण को बार-बार पढ़ने और उसमें पूज्य तनसिंह जी द्वारा संघ के स्वयंसेवक के लिए वर्णित मापदंडों के अनुसार अपने जीवन को बनाने की बात कही। बैठक के दौरान मई में आयोजित होने वाले उच्च प्रशिक्षण शिविर के संबंध में चर्चा हुई तथा शिविर में भाग लेने वाले स्वयंसेवकों की सूची तैयार की गई। जयपुर में लगने वाली शाखाओं की संख्या बढ़ाने पर भी चर्चा हुई। संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम के बाद स्नेह भोज भी रखा गया।

सरंक्षक श्री की मुख्यमंत्री से भेंट

राजस्थान के मुख्यमंत्री के बाड़मेर प्रवास के दौरान स्थानीय विधायक मेवाराम जैन के आवास पर माननीय संरक्षक श्री व माननीय मुख्यमंत्री की संक्षिप्त भेंट हुई। इस अवसर पर माननीय संरक्षक श्री ने विगत दिनों राजपूत समाज के लोगों के साथ हुई आपराधिक घटनाओं पर समुचित कार्यवाही न होने की बात रखी एवं तत्संबंधी एक लिखित नोट भी दिया। माननीय मुख्यमंत्री ने नोट को पढकर तद्नुसार कार्यवाही करने को आश्वस्त किया।

प्रशासनिक अधिकारियों का स्नेहमिलन संपन्न

राजस्थान प्रशासनिक सेवा एवं अधिनस्थ सेवाओं के नवचयनित अधिकारियों के प्रशिक्षण के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक स्नेहमिलन संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में रखने की परंपरा विगत वर्षों में प्रारंभ हुई। ऐसा तृतीय स्नेहमिलन विगत 27 मार्च को आयोजित किया गया जिसमें प्रशिक्षणाधीन नवचयनित RAS, RPS, RACS, RTS आदि के साथ प्रशिक्षणाधीन उपनिरीक्षक भी शामिल हुए एवं पूर्व में सेवारत वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उनका संवाद हुआ। स्नेहमिलन की भूमिका व विषय बताते हुए वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी महेन्द्रप्रताप सिंह गिराब ने कहा कि विगत स्नेहमिलन में सिविल सेवाओं हेतु संभावनाशील युवकों को श्रेष्ठ संस्थान में कोचिंग करवाने को लेकर व्यवस्था करने का प्रस्ताव आया था। उस पर विचार करने के बाद यह योजना बनी है कि समाज के आर्थिक रूप से कमजोर 100 संभावनाशील युवकों को छांटने के लिए एक राज्य स्तरीय परीक्षा आयोजित करवाई जाएगी और उनमें से प्रथम 25 को पूर्णतया निःशुल्क, अगले 25 को 25% फीस पर, अगले 25 को 50% फीस पर व अंतिम 25 को 75% फीस पर कोचिंग करवाई जाएगी।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खदरपर (गुजरात) में बाल शिविर संपन्न

गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद प्रांत के खदरपर स्थित मुखड़ो जी गोहिल आश्रम में दो दिवसीय बाल शिविर 26 से 27 मार्च तक सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए घनश्याम सिंह बावड़ी ने बालकों को हमारे इतिहास व संस्कृति से परिचित कराया। साथ ही बालकों को श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिक्षण आदेश, सामान्य नियम, शाखा आदि के बारे में जानकारी प्रदान की गई व उनका अभ्यास कराया गया। शिविर में खदरपर, मोरचंद, खड़सलिया, थलसर, धोलेरा, पांची, भावनगर, बाड़ी, तलाजा, जाजमेर, मधुवन, दाठा, रोजिया, कनाड, वालर, नारी, वलभीपुर, वाटलिया आदि गांवों के लगभग 200 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था का जिम्मा ग्रामवासियों ने मिलकर संभाला। गोहिलवाड संभाग प्रमुख धर्मेंद्र सिंह आमली, सौराष्ट्र कच्छ संभाग प्रमुख छनुभा पछेगाम सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

सूरत शाखा में पुलिस आयुक्त द्वारा जागरूकता संदेश

सूरत प्रांत के सारोली मंडल की वीर अभिमन्यु गार्डन में लगने वाली तनेराज शाखा में 30 मार्च को सूरत के पुलिस आयुक्त अजय सिंह तोमर अपने सहयोगियों सहित पहुंचे और स्वयंसेवकों को जागरूकता संदेश देते हुए वर्तमान के विषाक्त वातावरण में स्वयं को स्वस्थ रखने, समाज व राष्ट्र के जिम्मेदार सदस्य के रूप में अपने दायित्व को निभाने, आपस में मिलजुल कर प्रेम पूर्वक रहने व सजग नागरिक के रूप में पुलिस व प्रशासन का सहयोग करने की बात कही। प्रांत प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने आयुक्त महोदय को शाखा की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी तथा उन्हें 'यथार्थ गीता' पुस्तक भेंट की।

बुटाटी (नागौर) में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न

नागौर संभाग के बुटाटी धाम में 1 से 3 अप्रैल तक श्री क्षत्रिय युवक संघ का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ को समझने के लिए हमें अपने हृदय के भावों को जगाना पड़ेगा।

तीन दिन के इस शिविर में संघ आपके जीवन में उतरकर आपको कर्तव्य पालन के मार्ग पर आरूढ़ करने का प्रयत्न कर रहा है लेकिन यह प्रयत्न तभी सफल होगा जब आप की ओर से भी संघ को पूर्ण सहयोग मिलेगा। संघ के शिक्षण का सार संघ द्वारा बताई गई छोटी-छोटी बातों में निहित है। यदि हम संघ के निदेर्शों का यथारूप पालन करेंगे तो यह छोटी-छोटी बातें ही हमारे जीवन में एक महान क्रांति का सूत्रपात करेंगी। पूज्य श्री तन सिंह जी द्वारा प्रतिपादित संघ की यह सामूहिक संस्कारमयी प्रणाली ही समाज में उच्च नैतिक चरित्र के निर्माण का कार्य कर सकती है इसलिए सभी प्रकार की लापरवाही को त्याग कर पूर्ण मनोयोग से संघ के बताए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करें। शिविर में बुटाटी, आकेली बी, बरनेल, तंवरा, बिखरनिया, देशवाल, पुनास, खारिया कला, निमड़ी, दातीना, डडेल, भवाद, छापरी, तिलानेश, गुढ़ा जोधा, टालनेयू, ढावा, राजोद, रसाल, आसरवा, छापड़ा, जाखण, आसींद, कोविया, धूडिला, सेवद, राजनोता, दयालपुरा, मेड़ता, आचीना, खिंयास आदि गांवों के लगभग 140 युवाओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजपूत समाज बुटाटी के बजरंग सिंह, देवेन्द्र सिंह, जगदीश सिंह, जगतपाल सिंह, सतपाल सिंह, सुखवीर सिंह व रामेश्वर चोयल ने व्यवस्था में सहयोग किया। नागौर प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल एवं कुचामन प्रांत प्रमुख नत्थू सिंह छापड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

नवरात्र प्रारंभ पर यज्ञ का आयोजन

बालोतरा स्थित वीर दुगार्दास राजपूत बोर्डिंग में नवरात्रा का शुभारंभ यज्ञ के द्वारा किया गया। छात्रावास के वार्डन बलवंत सिंह कोटडी ने छात्रों के साथ मिलकर यज्ञ किया और बताया कि पूरे 9 दिन तक छात्रों द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ की 'यज्ञविधि' पुस्तक में निर्देशित विधि के अनुसार हवन किया जाएगा। 2 अप्रैल को सूरत की वीर दुगार्दास शाखा में भी सामूहिक यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया जिसमें सभी शाखाओं के स्वयंसेवकों ने सम्मिलित होकर एक दूसरे को विक्रम संवत के नववर्ष की बधाई दी।

खुशवीर सिंह पीपासर का सैनिक स्कूल में चयन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक भंवरसिंह पीपासर के पुत्र खुशवीर सिंह का सैनिक स्कूल चित्तौड़गढ़ में चयन हुआ है। इसके उपलक्ष्य में खुशवीर सिंह के विद्यालय गुरुकुल किड्स एकेडमी जयपुर द्वारा उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ईटाला (गुजरात) में तीन दिवसीय शिविर संपन्न

गुजरात में सौराष्ट्र कच्छ संभाग के राजकोट प्रांत के पडघरी मंडल के ईटाला गांव स्थित स्वर्गीय पीसी जडेजा के फार्महाउस पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 9 से 11 अप्रैल तक हुआ। शिविर का संचालन करते हुए प्रवीण सिंह धोलेरा ने बालकों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें हमारे वास्तविक स्वरूप की पहचान कराने का कार्य कर रहा है। संसार के प्रभाव में आकर हम अपनी पहचान को, अपने स्वधर्म को, अपने कर्तव्य को, अपनी परंपरा और संस्कृति को, अपने इतिहास को भूल गए हैं। संघ अपने शिविरों के माध्यम से हमें उनकी मात्र याद ही नहीं दिला रहा, बल्कि उनके अनुरूप जीवन जीने का अभ्यास भी करवा रहा है। संघ अपनी ओर से पूरा प्रयत्न कर रहा है, लेकिन उस प्रयत्न के साथ जब तक हमारी निष्ठा, सजगता और समर्पण नहीं जुड़ेंगे तब तक हमारा जीवन आदर्श नहीं बन सकेगा। इसलिए संघ जो कुछ हमें बता रहा है उसे पूरी निष्ठा के साथ अपने जीवन में उतारने का अभ्यास करें और बार-बार संघ के शिविरों व शाखाओं में आकर इस अभ्यास को बनाए रखें। शिविर के दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीत सिंह धोलेरा व प्रवीण सिंह सोलिया का सानिध्य भी बालकों को प्राप्त हुआ। शिविर में शीशांग, मेघपर, खोखरी-1, खोखरी-2, हडमतिया, विसामन, चनॉल, जोतपुर छल्ला, कोटडा नायानी, शानपर, देदकरड, नाना इटाला, अवानिया, धोलेरा, गेडी (कच्छ) आदि गांवों के लगभग 250 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। चंद्र सिंह रोजिया व शक्ति सिंह कोटडा नायाणी ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

शक्ति संचय ही शक्ति की श्रेष्ठ उपासना

आज शक्ति की उपासना का पर्व 'नवरात्रि स्थापना' है। हम शक्ति की उपासना कैसे करें, हमारे पूर्वज यह उपासना कैसे करते थे, शक्ति की उपासना का श्रेष्ठतम स्वरूप क्या है? ये सब प्रश्न हमारे सामने आज के दिन खड़े होने चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघप्रमुख पूज्य आयुवान सिंह जी ने अपनी पुस्तक मेरी साधना में शक्ति की प्रचलित आराधना की अपेक्षा शक्ति के उपार्जन को हमारे लिए वरैण्य बताया है और इसी प्रकार की आराधना की हमारी पूर्वज परंपरा रही है। समाज का प्रत्येक घटक शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा से शक्तिशाली बनने के लिए साधना में संलग्न हो इसके लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ विगत 75 वर्षों से साधनारत है। यही शक्तिशाली बनने का आधारभूत तरीका है और इसके लिए नियमित व निरंतर साधना अपेक्षित है। 1 अप्रेल को जालोर जिले के बेदाणा गांव में आयोजित स्नेहमिलन में चर्चा के तहत उपरोक्त बात बताई गई। स्नेहमिलन में बताया गया कि इसके

उदयपुर

के उपाय संघ के ये दोनों आनुषंगिक संगठन बताते हैं और उसके लिए समाज को प्रेरित करते हैं। हमें इनके संदेश को प्रत्येक राजपूत तक पहुंचा कर सहयोगी बनना चाहिए। अंत में बताया गया कि हीरक जयंती के बाद संघ का सहयोग करने की यदि चाह पैदा हुई है तो हम संघ के शिविरों में शिविरार्थी बनकर, शिविर लगवा कर, शिविरों में बच्चे भेजकर, शाखाओं से जुड़कर, पूज्य तनसिंह जी का साहित्य पढ़कर व प्रसारित कर, संघशक्ति पथप्रेरक के ग्राहक सदस्य बनकर, अन्य लोगों को

दांतीणा

साथ ही व्यवस्था की शक्ति अपने आप में बड़ी शक्ति होती है। यदि व्यवस्था की यह शक्ति श्रेष्ठ लोगों के हाथ में हो तो उसका सदुपयोग होता है और यदि नेष्ठ लोगों के हाथ में हो तो हानिकारक होती है। हमारा समाज नानाविध कमियों के बावजूद तुलनात्मक रूप से आज भी श्रेष्ठता के निकट है ऐसे में इस व्यवस्था में सक्रिय होकर इसका संपूर्ण मानवता के लिए उपयोग करना हमारे लिए अपेक्षित है और इसी अपेक्षा की पूर्ति के लिए संघ श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के रूप में काम कर रहा है। राजनीतिक रूप में व्यवस्था में महत्ती भागीदारी के लिए श्री प्रताप फाउंडेशन व अन्य क्षेत्रों के लिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन कार्य कर रहा है। इससे पहले 31 मार्च को सिरोही में स्नेहमिलन आयोजित हुआ जिसमें उपस्थित समाज बंधुओं ने हीरक जयंती के अनुभव साझा किए। दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह ने SKPF व श्री प्रताप फाउंडेशन के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि सत्ता में भागीदारी को बढ़ाने

ग्राहक बनने को प्रेरित करके अथवा संघ के आनुषंगिक संगठनों के सहयोगी बनकर संघ से जुड़ सकते हैं। स्नेहमिलन का संचालन संभाग प्रमुख अर्जूनसिंह देलदरी ने किया। इससे पहले 1 अप्रेल को ही बाली जिला पाली में स्नेहमिलन रखा गया जिसमें दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह ने श्री प्रताप फाउंडेशन व दिग्विजय सिंह कोलीवाड़ा ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्ययोजना की जानकारी दी। अंत में बताया गया कि आज अपराधी प्रवृत्ति के लोग व्यवस्था से ताकत पाते हैं और उनका एक मात्र उपाय व्यवस्था में बैठे उनके सहयोगियों की राजनीतिक ताकत कम करना है और वह हमारे शक्तिशाली होने से संभव है। संघ हमें हर दृष्टिकोण

प्रतापगढ़

से शक्तिशाली बनाना चाहता है और उसके लिए विभिन्न मोर्चों पर काम कर रहा है। संघ हमें बताता है कि शक्तिशाली बनने के प्रयासों के साथ साथ यह समझ भी होनी आवश्यक है कि शक्तिशाली क्यों बनना है और उसका अभ्यास भी करवाता है। 31 मार्च की शाम उदयपुर स्थित कुंभा सभागार में विद्यार्थियों से संवाद का कार्यक्रम रखा गया जिसमें महाविद्यालयी छात्र उपस्थित रहे। विद्यार्थियों से उनकी अपेक्षाएं पूछी गई एवं उनके विषय में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा क्या उपाय किए जा रहे हैं, इसकी जानकारी दी गई। इस संवाद में विद्यार्थियों के अतिरिक्त प्रादेशिक परिवहन अधिकारी प्रकाश सिंह भदरु, तहसीलदार ऐसोसिएशन राजस्थान के अध्यक्ष विमलेन्द्र सिंह चिमनपुरा, सुखाड़िया विश्वविद्यालय के वित्त नियंत्रक दलपत सिंह गुडाकेशरसिंह ने भी अपने विचार रखे। संचालन बृजराजसिंह खारड़ा ने किया व संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमल भी उपस्थित रहे।

28 मार्च को प्रतापगढ़ के श्री अम्बिका बाणेश्वरी राजपूत छात्रावास में फाउंडेशन की कार्यविस्तार बैठक रखी गई जिसमें बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ साधना का मार्ग है जो क्षत्रियत्व के निर्माण के लिए अनवरत रूप से कार्य कर रहा है और वही उसका मूल कार्य है वहीं समाज की समय सापेक्ष समस्याओं पर श्री प्रताप फाउण्डेशन एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन कार्य कर रहा है। हमें सकारात्मक सोच रखते हुए अपने मत की कीमत समझकर मतदान करना चाहिए, वर्तमान व्यवस्था में जितनी भी सरकारी योजनाएं है उनको समाज तक पहुंचाने एवं उसके उपयोग के बारे में

बुटाटी

जागरुकता फैलानी चाहिए। बैठक में वागड़ जिला समिति के लाखन सिंह लाम्बापारड़ा, दिग्विजय सिंह जी चिकलाड, कुबेर सिंह सेलारपुरा, हरिश्चंद्र सिंह गनोड़ा एवं स्थानीय समाजबंधु सम्मिलित थे। 29 मार्च को राजपूत छात्रावास नया परिसर डांगपाड़ा बांसवाडा में बांसवाड़ा जिले की कार्य विस्तार बैठक रखी गई जिसमें जिले भर के क्षत्रियो ने भाग लिया। बैठक में संघ द्वारा क्षत्रियत्व को जागृत करने के लिए की जा रही साधना की बात करते हुए आनुषंगिक संगठनों द्वारा समय-

पोकरण

समय पर समाज को वर्तमान राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने, नकारात्मक सोच को सकारात्मकता में बदलने एवं अन्य समाजों से मैत्री व्यवहार बनाए रखने तथा राजनेताओं व समाज के बीच सामंजस्य बिठाने की आवश्यकता के बारे में चर्चा हुई। चर्चा में बताया गया कि समाज में सभी तरह के लोग हैं, हमें अपने सकारात्मक कर्म की लकीर को इतना बढ़ाना है कि नकारात्मक लोगों की लकीर स्वतः ही छोटी हो जाए। कार्यक्रम में वागड क्षत्रिय महासभा बांसवाडा के जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिंह आनंदपुरी, जयराज सिंह भुवासा, गुमान सिंह वालाई, हनुमन्त सिंह सज्जन सिंह का गडा, लाखन सिंह लाम्बापारड़ा, राज्यवर्धन सिंह ठिकरिया सहित समाज बन्धु उपस्थित रहें। इसी क्रम में 30 मार्च को डूंगरपुर जिले के लक्ष्मण राजपूत छात्रावास में स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में बताया गया कि राजपूतों को उनका स्वाभविक जीवन जीने की प्रेरणा देने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में संस्कार निर्माण का कार्य कर

रहा है, सभी क्षत्रियों को साधना के मार्ग पर चलना होगा, सकारात्मक विचारधारा के साथ सभी जाति वर्ग के साथ समन्वय स्थापित करके आगे बढ़ना होगा। कार्यक्रम में गुमान सिंह वालाई, अरविन्द सिंह गेहूँवाड़ा, जिला समिति के जितेन्द्र सिंह मांडवा बियोला, गोविन्द सिंह गेहूँवाड़ा, देवेन्द्र सिंह वाजरड़ा, घनश्याम सिंह वाजरड़ा, समानता मंच के दिग्विजय सिंह करेलिया, वागड़ क्षत्रिय महासभा नगर डूँगरपुर के सदस्य गण एवं स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे। 1 अप्रेल की शाम जालोर के निकट सामतीपुरा में जालोर, सिरोही व पाली की बैठक रखी गई जिसमेंआगेकी कार्य योजना बनाई गई। इसी प्रकार श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की नियमित बैठकों की श्रृंखला में 27 मार्च को चुरू जिले की सुजानगढ़ विधानसभा क्षेत्र की बैठक जाजोदिया धर्मशाला में सम्पन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य जय सिंह सागु ने श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य, गठन एवं कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी। बैठक में संघ के जयपुर संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर, लाडनूं प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी, बेग सिंह दूंकर, विक्रम सिंह सांडवा, रूप सिंह परावा आदि ने अपने विचार रखें। फाउंडेशन की नागौर जिला समिति के सदस्य मगन सिंह बरनेल सहित आनंद सिंह बोबासर, महावीर सिंह पार्वतीसर, सुरेन्द्र सिंह स्यानण, बजरंग सिंह गेड़ाप, चांद सिंह बोबासर एवं अन्य स्थानीय सहयोगी भी बैठक में उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संपादकीय

सकारात्मकता को संजोयें, षड़यंत्रों को विफल करें

हीरक जयंती ने हमारे समाज और अन्य सभी समाजों में सकारात्मक संदेश दिया। अभी तक जहाँ भी जा रहे हैं, हीरक जयंती की ही चर्चा सुनने को मिल रही है। सभी जाति समाजों के लोग विभिन्न दृष्टिकोणों से उसकी चर्चा करते हैं और उससे प्रेरणा लेने की बात करते हैं। कोई अनुशासन से प्रेरणा लेने की बात करता है तो कोई हमारे स्वतः स्फूर्त सामाजिक भाव से। कोई सामाजिक नेतृत्व के अनुगमन वाली मंचीय व्यवस्था को अनुकरणीय बता रहा है तो कोई वहां से प्रसारित हुए सामाजिक सद्भावना के संदेश को। कोई मंच पर सभी जाति- समाज व संगठनों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति से प्रेरणा ले रहा है तो कोई वहां स्थापित राजनीतिक संतुलन की। कोई समारोह में आयी लाखों की उपस्थिति को प्रेरणादायी बता रहा है तो कोई महिलाओं की गरिमामयी उपस्थिति को। इस प्रकार जो जिस दृष्टिकोण से देख रहा है वह उसी दृष्टिकोण से प्रेरणा लेने की बात कर रहा है। इस प्रकार हर तरफ प्रसारित हुए सकारात्मक संदेश से हर कोई सकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ है और इसीलिए सभी तरह की नकारात्मकताएं नैपथ्य में चली गई हैं। संघ के प्रति पहले से सद्भावना रखने वाले लोग इस सकारात्मकता से प्रसन्न है वहीं इस सकारात्मकता के बाद ऐसे सद्भावी लोगों की संख्या में भी आशातीत बढ़ोतरी हुई है। दूसरी तरफ हमारे समाज के प्रति सद्भावना रखने वाले अन्य समाज के लोगों में भी इस सकारात्मकता ने प्रसन्नता का संचार किया है और समाज के प्रति अन्य समाजों के ऐसे सद्भावी लोगों की संख्या में भी आशातीत बढ़ोतरी हुई है। लेकिन इस सकारात्मक प्रवाह के बीच भी अनेक ऐसे लोग हैं जिनकी नकारात्मकता इस वातावरण के कारण दब भले ही गई हो परंतु अवसर पाकर प्रकट होने व मुखर होने को तत्पर है। हमारे समाज में भी ऐसे अनेक लोग हैं जो अपनी व्यक्तिगत कुंठाओं के कारण संघ के प्रति अपनी नापसंदगी प्रकट करते रहते हैं (कारण क्योंकि व्यक्तिगत है इसलिए उनके स्वयं के सकारात्मक व्यक्तिगत प्रयासों के बिना दूर होते नहीं हैं) वे अवसर की तलाश में इधर उधर झांकते रहते हैं और किसी न किसी बहाने अपनी कुंठा को व्यक्त करते रहते हैं। इनका ऐसा करना कोई विशेष महत्व नहीं रखता क्योंकि संघ प्रारंभ से ही ऐसे लोगों को सहन करता रहा है और संघ का अनुभव कहता है कि ऐसा करने वाले बहुत ही कम समय में ही अप्रासंगिक होकर नैपथ्य में चले जाते हैं और उनकी जगह नये लोग लेते रहते हैं। संघ की विगत 75 वर्षों की यात्रा में ऐसा निरंतर होता रहा है।

लेकिन हमारे समाज से द्वेष रखने वाले या विरोध करने वाले अन्य समाजों के लोग हीरक जयंती के सकारात्मक प्रभाव से हतप्रभ हैं और वे प्रयास पूर्वक ऐसे हथकंडे अपना रहे हैं जिनकी प्रतिक्रिया में हमारी छवि को धूमिल किया जा सके। वे जानबूझकर ऐसे अवसर गढ़ने को प्रयत्नशील हैं जिनसे उन सब प्रभावों को न्यूनतम किया जा सके जो परमेश्वर की कृपा से हुए हीरक जयंती समारोह के माध्यम से प्रकट हुए हैं। उस समारोह में मंच पर उपस्थित सभी जाति समाज के लोगो के कारण यह संदेश गया कि राजपूत समाज का सभी जाति वर्गों से सम्मान जनक सद्भावनापूर्ण व्यवहार है और हमारे विरोधी अब इस प्रकार के प्रयास करेंगे कि हमारे समाज के लोगों का अन्य समाज के लोगों से संघर्ष हो और हमारी छवि धुमिल हो। उस समारोह में यह संदेश दिया गया कि हम दलितों और पिछड़ों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार करने की हमारी पूर्वज परंपरा का निर्वहन करें और उसका प्रभाव भी दृष्टिगोचर हो रहा है। हमारे विरोधी चाहेंगे कि समाज के इस सकारात्मक पक्ष को धूमिल करने के लिए किसी घटना के माध्यम से दुष्प्रचार किया जाए, ऐसे में हमें सावधानी रखनी अपेक्षित है। हमारे समाज के प्रतिक्रिया वादी लोग भी उनके षड़यंत्र के मोहरे बन सकते हैं, हमें उनको भी समझाना है और उनके प्रभाव से मुक्त रहना है। हमारे विरोधियों द्वारा आपराधिक घटनाओं के माध्यम से हमें लक्ष्य बनाया जाएगा और बनाया जा भी रहा है ऐसे में हमारी प्रतिक्रिया समझदारी भरी होनी अपेक्षित है। ऐसे अवसरों पर हमारा दायित्व गुरुत्तर हो जाता है, हमें हमारे पर होने वाले ऐसे आक्रमणों का युक्तिसंगत प्रतिउत्तर भी देना है, पलायनवादी नहीं होना परंतु प्रतिक्रिया में हम स्वयं ही हमारी हानि कर हमारे विरुद्ध किए जा रहे षड़यंत्रों के मोहरे न बन जायें यह सावधानी भी रखनी है। आजादी के बाद हमारी छवि प्रतिक्रिया वादी बनाने का निरंतर प्रयास किया गया, हमें नकारात्मक लोगों के रूप में प्रचारित किया गया और हीरक जयंती समारोह ने उनके इस मिथ्या प्रचार को पीछे धकेला है ऐसे में हमारे विरोधी ऐसे हालात बना सकते हैं कि हमें नकारात्मक प्रतिक्रिया के लिए उकसा कर वे अपने पूर्ववर्ती मिथ्या प्रचार को जारी रखने के लिए सामग्री जुटा सकें। इस समारोह ने हमारे अनुशासन और जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार की हमारी विशेषता को प्रकट किया है। हमारे विरुद्ध मिथ्या प्रचार करने वाले हमारे विरोधी ऐसी परिस्थितियां बनाने को आतुर हैं जिससे हमारी इस विशेषता को ढककर इसके विपरीत आचरण करने को हमारे प्रतिक्रियावादी लोग आतुर हों और उनको अपने मिथ्या प्रचार को जारी रखने को सामग्री मिलती रहे। इस प्रकार मूल बात यह है कि हीरक जयंती समारोह में परमेश्वर की कृपा से हमारी जो स्वभावगत श्रेष्ठ छवि प्रकट हुई है हम सब उसे बनाये रखने के लिए एवं उसे पुष्ट करने के लिए विशेष प्रयास करें। जो कुछ 22 दिसंबर को प्रकट हुआ वह कोई एक दिन में प्रकट नहीं हुआ था, वह हमारा मूलभूत स्वभाव था जो परमेश्वर की कृपा से बने अनुकूल वातावरण के कारण प्रकट हुआ था, अब हमारी जिम्मेदारी उस प्रकटीकरण को निरंतर करना है और उसके लिए आवश्यक है कि हम स्वयं में हमारे विरुद्ध होने वाले सभी प्रकार के षड़यंत्रों को समझने की समझ विकसित करें और फिर उनसे बचकर उन्हे विफल करने में सफल होवें। यहां हमें समझना चाहिए कि समझदार होने का मतलब कायर होना नहीं होता है, क्षत्रिय में धैर्य और शौर्य दोनों होना अपेक्षित है। शौर्य के अभाव में धैर्य और धैर्य के अभाव में शौर्य अवगुण बन जाया करते हैं इसलिए हमें न शौर्य को छोड़ना है और न ही धैर्य को। शौर्य और धैर्य का यह सामंजस्य ही हमारे विरुद्ध हमारे विरोधियों द्वारा किए जाने वाले षड़यंत्रों को विफल करने में सक्षम बना सकता है और इसी से हम परमेश्वर की हम पर हुई कृपा को संजो पायेंगे। किसी भी षड़यंत्र का शिकार हुए बिना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में ही हमारा क्षत्रियत्व पुष्ट होता है, षड़यंत्र का शिकार होकर विरोधी की योजना अनुसार ही प्रतिक्रिया देना तो मूर्खता होती है, उसमें कोई समझदारी नहीं होती। इसलिए हमें हीरक जयंती समारोह से प्रकट हुई सकारात्मकता को संजो कर रखने के लिए धैर्य पूर्वक सब परिस्थितियों पर चिंतन कर शौर्यपूर्वक हमारे विरोधियों के मंसुबों को विफल करना है। ऐसा करना ही हमारी रणनीतिक सफलता होगी और इससे ही हमें बिना ही कारण अपना विरोधी मानकर हमारे विरुद्ध काम करने वाले विरोधियों को पस्त कर पायेंगे।

मेवाड़ का गुहिल वंश

जैत्रसिंह के बाद उनका पुत्र तेजसिंह 1252 ई. के आसपास मेवाड़ का शासक बना। तेजसिंह भी अपने पिता की भांति एक सुयोग्य और प्रतिभा सम्पन्न शासक था। तेजसिंह के शासनकाल में बौतका के वघेल शासक वीरधवल ने मेवाड़ पर आक्रमण किया। वीरधवल ने अपनी शक्ति बढ़ाकर त्रिभुवन पाल से गुजरात का राज्य छीन लिया था और अब अपने राज्य का विस्तार करने की इच्छा से मेवाड़ पर चढ़ आया था। वीरधवल का सामना मेवाड़ी वीरों ने चित्तौड़ के तक्षारक्ष क्षेम के पुत्र भीमसिंह के नेतृत्व में किया, यह युद्ध अनिर्णित रहा और वीरधवल को बिना किसी लाभ के वापिस लौटना पड़ा। प्रधान भीमसिंह को इस युद्ध में वीरगति प्राप्त हुई। शक्तिशाली शत्रु के सजल प्रतिरोध से मेवाड़ और शासक तेजसिंह की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इस युद्ध का उल्लेख चीरवै के शिलालेख में मिलता है। तेजसिंह को भी अपने पिता जैत्रसिंह की भांति दिल्ली सल्तन्त से युद्ध का अवसर मिला। दिल्ली शासक बलवन ने राज्य विस्तार की महत्वकांक्षा रणथम्भौर और चित्तौड़ को अधीन करने के लिए आक्रमण किया। परन्तु तेजसिंह युद्ध कौशल के सामने बलवन की एक ना चली और तुर्क सेना को पराजित होकर लौटना पड़ा। तेजसिंह के राज्यकाल में उसकी रानी जयतल्ल देवी ने चित्तौड़ में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। तेजसिंह एक एक योग्य और प्रजावत्सल शासक था जो कि उनके विभिन्न विरुदो 'परमभट्टारक', 'महाराजाधिराज', 'परमेश्वर' से पता चलता है। तेजसिंह ने लगभग 18-20 वर्ष शासन किया। तेजसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र समरसिंह मेवाड़ का शासक बना। ई. 1267-1273 के मध्य वह किसी समय मेवाड़ का शासक बना। कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में उसे शत्रुओं की शक्ति का अपहर्ता कहा गया है जिससे पता चलता है कि वह एक शक्ति सम्पन्न शासक था। मेवाड़ के आसपास के सभी शासक उसकी शक्ति का भय मानते थे और सभी उसके राजनीतिक प्रभाव को स्वीकार करते थे। आबू शिलालेख में उसे तुर्कों से गुजरात का उद्धारक बताया गया है। संवभत् बलवन के किसी सेनाध्यक्ष से सेमरसिंह का युद्ध हुआ था जिसमें समरसिंह को विजय प्राप्त हुई थी। 'जिन प्रणसुरि' के 'तीर्थकल्प' से पता चलता है कि सुल्तान अलाउद्दीन का सेनापति 'उलुग खां' अपनी सेना सहित गुजरात जा रहा था तब जब उसने मेवाड़ की सीमा में प्रवेश किया तो समरसिंह ने उसका मार्ग रोक दिया और उससे दण्ड लेकर उसे मेवाड़ की सीमा से जाने दिया। समरसिंह के शासनकाल के प्रमुख रूप से 8 शिलालेख मिलते है। जिनसे उसके शासन काल के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है। चीखै के लेख में समरसिंह को सिंह का सदृश और अत्यन्त सूर कहा गया है। साथ ही उसे प्रजाहित वर्धक और सधर्मनर्भज्ञ भी कहा गया है। उसके समय के शिलालेखों से समरसिंह की प्रजा के हित की कामना और सहिष्णुता पूर्ण व्यवहार की नीति का बोध होता है। विभिन्न मंदिरों और मठो का उसने जीर्णोद्धार करवाया और उनके लिए अनुदान की व्यवस्था की। समरसिंह की धर्मनिष्ठा और धार्मिक सहिष्णुता की समकालीन लेखक अत्यन्त प्रशंसा करते है। समरसिंह का काल विद्योन्नित के लिए भी प्रसिद्ध है। उस समय रत्न प्रभसुरि, पार्श्वचन्द्र, भावशंकर, शुभचन्द्र जैसे विद्वान लेखक और प्रशस्तिकार थे। समरसिंह मेवाड़ के महान शासकों में से एक थे। उनका लगभग 30 वर्षों का शासनकाल मेवाड़ के प्रतिभा सम्पन्न कालों में से एक था। **(क्रमशः)**

पनेर व पाली के बहाने

वैसे तो आजकल राजस्थान में आये दिन किसी न किसी कोने में आपराधिक घटनाएं घटती रहती हैं। अपराध मुक्त समाज एक आदर्श भले ही हो लेकिन उसको व्यवहार में लाना उतना ही कठिन है। इसको व्यवहारिक बनाने के लिए शासन का संचालन करने वाले शासकों का चरित्र भगवान राम का सा होना आवश्यक होता है और उसका आज सर्वत्र अभाव है। इसलिए अपराध अब शनैः शनैः दिन प्रतिदिन की घटनाएं होती जा रही हैं। लेकिन जब इन आपराधिक घटनाओं में अपराधियों और पीड़ितों के साथ जाति के आधार पर सरकारों और प्रतिक्षारत सरकारों (प्रतिपक्ष) का व्यवहार नियत होने लगे तो पीड़ितों की पीड़ा गुणित हो जाती है। ऐसा ही विगत दिनों घटित पनेर व पाली की घटनाओं में प्रकट हुआ। पनेर में एक सरकारी कर्मचारी पर्वतसिंह पर उसके द्वारा पंचायत में मनरेगा के तहत चल रहे कार्य में 400 मजदूरों व 10 मेट की अनुपस्थिति की शिकायत अपने उच्च अधिकारी को करने के कारण हमला किया गया। पर्वतसिंह को उस हमले से बचाने के लिए आये कुलदीपसिंह को लाठियों से पीट पीट कर व गाड़ी से कुचल कर मार दिया गया। इस घटना के विरोध में रूपनगढ़ कस्बा बंद रखा गया, आंदोलन हुआ, प्रेस वार्ताएं हुई लेकिन इसके बावजूद हमला करने वाले सरपंच पति को सामान्य पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया एवं इतनी बड़ी अनियमितता व गुंडागर्दी के बावजूद अभी तक सरपंच को निलंबित नहीं किया गया है जबकि पडौसी जिले में पलाड़ा सरपंच को केवल इसलिए निलंबित कर दिया गया था कि उनके पति पंचायत में सरपंच की कुर्सी पर बैठकर कर्मचारियों से बात कर रहे थे। इसी प्रकार पाली शहर में एक पुलिस कर्मी द्वारा एक राजपूत युवक को अवैध रूप से रातभर चौकी में रखकर मारपीट की गई। युवक के परिजनों द्वारा पुलिस को दी गई प्रथम सूचना रिपोर्ट के अनुसार उसे चौकी में पेशाब पिलाया गया, उसको छुड़वाने पहुंचे परिजनों को भी लज्जित किया गया और इन सब कारणों से उस युवक ने आत्महत्या कर ली लेकिन उस पुलिस कर्मी को ना ही तो बर्खास्त किया गया और ना ही गिरफ्तार किया गया क्योंकि परिजनों की रिपोर्ट और समाचार पत्रों में छपी खबरों के अनुसार वह पुलिसकर्मी अपने आपको पुलिस के सबसे बड़े अधिकारी का रिश्तेदार बताता है। इन दोनों ही घटनाओं में अपराधी एक जाति विशेष के हैं और पीड़ित राजपूत। दोनों ही घटनाओं को लेकर समाज उद्वेलित हुआ, सरकार के मुखिया तक भी बात पहुँचाई गई लेकिन केवल फोरी कार्यवाही के अतिरिक्त कुछ नजर नहीं आया। सरकार में बैठे राजपूत समाज के राजनेताओं को बात की जाती है तो वे यही कहते हैं कि जो कार्यवाही हुई वह भी उन्हीं के प्रयासों व समाज द्वारा बनाये गए दबाव के कारण संभव हुई अन्यथा इस सरकार में इस जाति विशेष के खिलाफ कार्यवाही होना असंभव सा लगता है। विपक्षी पार्टी के नेताओं से भी संपर्क साधा गया लेकिन अपराधियों की जाति ने यहां भी अपना प्रभाव दिखाया। सरकार की विफलताओं पर सदैव गरियाने वाले विपक्षी नेताओं ने भी इस मुद्धे पर (एक दो को छोड़कर) चुप्पी साध ली। इस प्रकार क्योंकि अन्याय राजपूत के साथ हुआ और अन्याय करने वाले एक जाति विशेष के लोग हैं इसलिए जिम्मेदारों की प्रतिक्रिया ऐसी थी जैसे कुछ हुआ ही न हो। ऐसे में हमारे सामने प्रश्न स्वाभाविक है कि हम क्या करें? क्या हम व्यवस्था से विद्रोह करें, क्या हम भी हिंसक हो जायें, क्या हम भी खून का बदला खून से लेने की बात कर कानून अपने हाथ में लेने को आतुर हो जायें? निश्चित रूप से हमारे में से अधिक लोगों का जबाब यही होगा कि हमें ऐसा ही करना चाहिए लेकिन ऐसा करने से स्थायी समाधान संभव नहीं है। हो सकता है अभी जोश जोश में हमारे कुछ लोग ऐसा करना प्रारंभ भी कर दें लेकिन ऐसी लड़ाई एक लंबे संघर्ष की माँग करती है और क्या हम इतनी तीव्रता से प्रतिरोध के लंबे संघर्ष का धैर्य रखते हैं इसका मूल्यांकन करना भी उतना ही आवश्यक है? हम विगत समय में हुई ऐसी घटनाओं को देखें और जांचें कि हमारी प्रतिक्रियावादी बातों की उम्र कितनी है और हम कितनी जल्दी ऐसे आक्रमणों को भूल जाते हैं। हमारा प्रतिरोध एक उफान की तरह होता है जो उफन कर शांत हो जाता है और हम फिर से पुराने ढर्रे पर लौट आते हैं। ऐसे में हमारे लिए विचारणीय यह है कि हमारे लिए वरैण्य क्या है? किन तरीकों से हम इन विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला कर पायेंगे और कितना लंबा कर पायेंगे? यहां यह स्पष्ट होना आवश्यक है कि हमारी वर्तमान स्थिति एक दिन की अवनति का परिणाम नहीं है और हमारे विरोधियों (जो कोई एक जाति नहीं बल्कि एक वृत्ति है जो कमोबेश सभी जाति समाजों में मौजूद है) की मजबूती भी एक दिन का परिणाम नहीं है बल्कि इसका भी दशकों का इतिहास है। हमें यह समझना पड़ेगा कि व्यवस्था अपने आपमें शक्ति होती है और हमारी भागीदारी व्यवस्था में निरंतर कम हो रही है। हमें यह भी समझना पड़ेगा कि राजनीति आज की इस व्यवस्था का सबसे मजबूत पक्ष है और उसमें हम हमारे विरोधियों से बहुत पीछे धकेल दिए गये हैं। राजनीति से प्रशासन प्रभावित होता है, व्यवसाय प्रभावित होते हैं, आजीविका प्रभावित होती है और इसलिए वहाँ पिछड़ने के कारण हम सब जगह पिछड़ते जा रहे हैं और व्यवस्था की शक्ति हमारे विरुद्ध उपयोग हो रही है। हालांकि संपूर्ण क्षत्रियत्व के सामने तो व्यवस्था की शक्ति भी नहीं ठहरती, भगवान राम के साथ व्यवस्था की शक्ति नहीं थी, भगवान कृष्ण के साथ व्यवस्था की शक्ति नहीं थी, दूर्योधन सदैव व्यवस्था पर काबिज रहा और पांडव सदैव उपेक्षित ही रहे, व्यवस्था की शक्ति में अकबर महाराणा प्रताप से कहीं अधिक शक्तिशाली था, दुगार्दास जी के साथ व्यवस्था की शक्ति नहीं थी इसलिए प्राथमिक आवश्यकता तो यही है कि हम क्षत्रियत्व की साधना करें जो श्री क्षत्रिय युवक संघ निरंतर कर रहा है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	मा.प्र.शि.	26.04.2022 से 02.05.2022 तक	बाढ़ मोचिंगपुरा (दौसा)। सीनियर सैकण्डरी स्कूल। दौसा से बेरावण्डा बसें व जीप है गढ में साधन उपलब्ध हो जाएगा।
2.	उ.प्र.शि.	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	आलोक आश्रम (बाड़मेर)। बाड़मेर से गेहूं रोड पर स्थित। - कम से कम 10वीं कक्षा की परीक्षा दे चुके हों। - दो प्राथमिक तथा एक माध्यमिक शिविर कर चुके हो, वो ही आ सकते हैं। - 60 वर्ष से ऊपर की आयु वाले या तो आमंत्रित हों या पूर्व स्वीकृति ले ली हो, वे ही आ सकेंगे। 18 मई की शाम तक पहुंचना है। गणवेश लेकर आएं।
3.	उ.प्र.शि. (बालिका)	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	विराट्रा (बाड़मेर)। बाड़मेर से बसें उपलब्ध हैं। - 9वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा कम से कम दो शिविर कर चुकी हों, वे ही आ सकेंगी। - केशरिया गणवेश आवश्यक

गजेन्द्रसिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

रामसीन में विक्रमोत्सव का आयोजन

जालौर जिले के रामसीन में 2 अप्रैल को वीर विक्रमादित्य सेवा संस्थान द्वारा सम्राट वीर विक्रमादित्य की स्मृति में विक्रमोत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने वीर विक्रमादित्य के महान चरित्र का परिचय देते हुए बताया कि परमार वंश के ऐसे प्रतापी सम्राट, जिनका शासन लोक कल्याण की दृष्टि से अतुलनीय हो, उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। हमारे महान पूर्वजों की स्मृति में आयोजित होने वाले ऐसे कार्यक्रम हमारे भीतर सामाजिक भाव उत्पन्न करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में हमारे महापुरुषों की पहचान बदलकर राजनीतिक हित साधने की जो प्रवृत्ति चल रही है, उसका हमें पुरजोर विरोध करना होगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व आईएएस गंगा सिंह परमार ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य में वे सभी गुण थे जो एक क्षत्रिय में होने चाहिए। उनकी न्याय व्यवस्था, जनता के प्रति पारिवारिक भाव, उनका श्रेष्ठ शासन आदि सभी उनके महान व्यक्तित्व के प्रमाण है। हमारे इन यशस्वी पूर्वजों का हम पर ऋण है और उस ऋण को उतारने के लिए आज हम सभी को एक साथ मिलकर कार्य करने की और समाज में पुनः क्षत्रियत्व को जागृत करने की आवश्यकता है। राजेंद्र सिंह आकोली ने वीर विक्रमादित्य का जीवन परिचय प्रस्तुत किया और उनके जीवन की प्रेरणास्पद घटनाओं का वर्णन किया। डूंगर सिंह आकोली ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्कार निर्माण के कार्य के महत्व को बताया। हितेंद्र सिंह थूर, बाघ सिंह पुनक, भैरू पाल सिंह कोलर ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। सुरेंद्र सिंह मांडोली, शेर सिंह चांदूर, जनक सिंह बूगाँव, छैल सिंह गोला, बाघ सिंह देलदरी, जोग सिंह सरत, अर्जुनसिंह बिबलसर, पूरण सिंह आकोली, ईश्वर सिंह कोलर, जसवंत सिंह थूर, शैतान सिंह सिन्धरा, नाथू सिंह रामसीन, राजेन्द्र सिंह पिंडवाड़ा, मोड़ सिंह सरत, राजेन्द्र सिंह बूगाँव, उगम सिंह कोलर, रतन सिंह बूगाँव, गजेन्द्र सिंह बिठन, महेंद्र सिंह कोलर सहित सैकड़ों की संख्या में समाजबंधु कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

(पृष्ठ पांच का शेष)

पनेर.. लेकिन आज की तात्कालिक परिस्थितियों में जैसे हम हैं, उस अवस्था में तो व्यवस्था की शक्ति का सहयोग आवश्यक है और इसके लिए आवश्यक है कि हम स्वयं की भागीदारी बढ़ायें और हमारे विरोधियों की भागीदारी को कम करें। हम हमारे समाज के सामने व अन्य समाजों के सामने यह तथ्य पेश करें कि किस प्रकार किसी जाति विशेष या वृत्ति विशेष का व्यवस्था पर कब्जा होने से असंतुलन पैदा होता है और वह असंतुलन किस प्रकार घातक हो सकता है? हम आम मतदाता तक यह बात पहुंचायें कि कहीं उनके मत से ऐसे लोग तो मजबूत नहीं हो रहे जो अपनी जाति के या अपने चहेते गुंडों को संरक्षण देते हैं? कहीं हम ऐसे लोगों को तो मजबूत नहीं कर रहे हैं जो न्याययुक्त बात कहने और करने में अपना पक्ष सोचता है और तदनुसार सलेक्टिव हो जाता है। कहीं हम ऐसे लोगों को तो मजबूत नहीं कर रहे हैं जो व्यवस्था की प्रशासनिक मशीनरी में येन केन प्रकारेण अपने पक्ष के लोगों को भर रहे हैं, कहीं हम ऐसे लोगों को मत देकर सत्ताधारी तो नहीं बना रहे हैं जो अवैध व्यवसाय करने वालों को संरक्षण देते हैं, उनसे सहयोग लेते हैं और बदले में उनकी हाजरी बजाते हैं। यह तो है एक पक्ष है कि हम ऐसे लोगों को रोकें, स्वयं जागरुक होकर रोकें, समाज को जागरुक कर रोकें, अन्य समाजों को जागरुक कर रोकें, सभी समाजों के श्रेष्ठ व सतोगुणी लोगों का सहयोग लेकर रोकें और दूसरा पक्ष है कि हम विकल्प बनना प्रारंभ करें, अपने स्वयं के श्रेष्ठ नेतृत्व को उभारना शुरू करें, अपनी राजनीतिक ताकत को बढ़ायें जिसके कारण सरकारें या विपक्षी हमारी उपेक्षा करना बंद करें। हम कह सकते हैं कि हीरक जयंती में हमने इतनी बड़ी भीड़ दिखाकर ताकत ही तो दिखाई है, आपका मानना कुछ अंश तक सही है लेकिन राजनीति भीड़ से नहीं वोट से प्रभावित होती है और जब तक हम उस भीड़ को वोट में तब्दील नहीं करेंगे तब तक चाहे तात्कालिक रूप से हम कितने ही उफन जायें, पानी के कुछ छींटों से हमें शांत कर दिया जाएगा और फिर कुछ नया घटित कर हमारा दमन करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाएगा। इसलिए पनेर और पाली जैसी घटनाओं पर केवल उफन कर शांत नहीं बैठना है बल्कि ऐसी घटनाओं से मिले जख्मों को हरा रखकर इस व्यवस्था में प्रभावी भागीदारी की चाह की आंच को जलाये रखना है और उस पर उबलते जाना है जिससे हमारी कमजोरियां भाप बनकर उड़ती जायें और हम अपने अपने शुद्ध स्वरूप में व्यवस्था की विकृति का विकल्प बनकर सुख व शांति के वाहक बनने को प्रस्तुत हो सकें।

(पृष्ठ तीन का शेष)

शक्ति संचय ही ...

इसी दिन जैसलमेर जिले की फलसूँड व पोकरण शहर की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक मेहराजसिंह साँकड़ा, खंगार सिंह झलोड़ा, फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद सदस्य नरेशपाल सिंह तेजमालता और कमल सिंह भैसड़ा सहित स्थानीय सहयोगी उपस्थित रहे। बैठक में फाउंडेशन की आगामी कार्ययोजना बनाई गयी।

2 अप्रेल को बाड़मेर जिले की कार्यविस्तार बैठक वांकल माता धाम, वीरातरा में सम्पन्न हुई। सम्राट विक्रमादित्य परमार का भी स्मरण किया गया व उनके इतिहास पर चर्चा हुई। बैठक में विरात्रा धर्मार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष कैप्टन सगत सिंह परो, श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख उदय सिंह देदूसर, महेन्द्र सिंह तारातरा, महेंद्र सिंह चौहटन, लख सिंह घोनिया, हिंगोल सिंह सनाउ, रणजीत सिंह चौहटन, दलपत सिंह सनाउ, खेत सिंह घोनिया, कृष्ण सिंह गोहड़ का तला आदि उपस्थित रहे। 3 अप्रेल को नागौर जिले की डेगाना विधानसभा क्षेत्र की बैठक बुटाटी में संपन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन कि केंद्रीय परिषद के सदस्य जय सिंह सागूबड़ी ने फाउंडेशन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। दिलीप सिंह बच्छवारी ने श्री प्रताप फाउंडेशन की वर्तमान परिपेक्ष्य में आवश्यकता बताई। कार्यक्रम के समापन पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा भेजी गई यथार्थ गीता सभी को भेंट की गई। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक हनुमान सिंह जी बिखरनिया, संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा, उगम सिंह गोकुल, नत्थू सिंह छापडा, शिवराज सिंह आसरवा, मगन सिंह बरनेल, मानवेन्द्र सिंह चुवा, जितेंद्र सिंह आकेली, भवानी सिंह भवाद, देवेंद्र सिंह बुटाटी, जितेंद्र सिंह कोटड़ी सहित डेगाना विधानसभा क्षेत्र के सभी गांवों के सहयोगी उपस्थित रहे।

10 अप्रेल को नागौर जिले की खींवसर विधानसभा क्षेत्र के दांतीणा गाँव की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संघ के नागौर प्रान्त प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया, फाउंडेशन की केन्द्रीय परिषद के सदस्य जय सिंह सागु बडी ने फाउंडेशन के बारे में विस्तार से बताया, सांग सिंह देउ ने ई-मित्र की योजनाओं के बारे में बताया और उम्मेद सिंह दांतीणा ने युवाओं में सकारात्मक क्रियाशीलता की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम के समापन पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा भेजी गई यथार्थ गीता सभी को भेंट की गई। कार्यक्रम में खींवसर विधानसभा क्षेत्र एवं दांतीणा के नजदीकी गाँवों से औकार सिंह देउ, रिड़मल सिंह पांचलासिद्धा, रघुवीर सिंह, पूर्व सरपंच मदन सिंह जी, गंगा सिंह गडी, भगवत सिंह सांखला, तेज सिंह, शैतान सिंह सहित स्थानीय सहयोगी उपस्थित रहे। इस दिन बाड़मेर जिले की शिव विधानसभा क्षेत्र के भिंयाड़ गांव की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में राजेन्द्र सिंह मातेश्वरी, महेंद्र सिंह तारातरा, नरेशपाल सिंह तेजमालता आदि उपस्थित रहे। फाउंडेशन की कार्ययोजना के चतुर्थ बिंदु के तहत जालोर जिले की जिला समिति द्वारा सांचौर स्थित श्री राव बल्लूजी छात्रावास में स्थानीय व्यापारियों की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन की जिला समिति के सदस्य विजेंद्र सिंह कीलवा ने फाऊंडेशन की कार्ययोजना के बारे में बताया एवं क्षेत्र के व्यापारी बंधुओं के साथ तालमेल बैठा कर आगे की कार्ययोजना पर चर्चा की। बैठक में संघ के सांचौर प्रान्त प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला, इंद्र सिंह झाब, सुमेर सिंह इशरोल, गजे सिंह सुरावा, महिपाल सिंह अचलपुर, अमर सिंह राजवी, भरत सिंह विरोल, डूंगर सिंह कारोला सहित अन्य व्यवसाय के क्षेत्र से जुड़े समाजबंधु उपस्थिति रहे। सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ तहसील के दिसनाऊ गांव की बैठक भी इसी दिन सम्पन्न हुई। बैठक में संघ के शेखावाटी प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया और श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्ययोजना पर प्रकाश डाला। फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य सुरेंद्र सिंह तंवरा ने श्री प्रताप फाउंडेशन के उद्देश्य और किस तरह श्री प्रताप फाउंडेशन समाज में राजनीतिक चेतना पैदा करने का कार्य कर रहा है, इस पर जानकारी दी। फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के अन्य सदस्य रतन सिंह छिंछास ने तहसील में किस तरह से संघ और उसके आनुषंगिक संगठनों के कार्य विस्तार को गति देनी है, उसकी कार्य योजना पर प्रकाश डाला।

(पृष्ठ एक का शेष)

सुख का उपाय...

परमेश्वर को याद रखने का मतलब राम, कृष्ण, अल्लाह यह सब बोलना मात्र नहीं बल्कि अपने हृदय में विराजित परमेश्वर के समीप पहुंचने का प्रयत्न करना है। मैं नहीं जानता आप में से कौन लोग ऐसा सुकृत्य कर रहे हैं, लेकिन यह जरूर कह सकता हूं कि सुकृत्य करने के लिए प्रेरणा चाहिए। हम मंदिर में जाते हैं, गुरुद्वारे में जाते हैं, वहां कितना शांत वातावरण होता है और हम उसको अशांत बना देते हैं। यह जो ऐसा पाखंड फैल रहा है धर्म के नाम पर, उसको रोकने में हम तभी सहायक हो सकेंगे जब हम अपनी अंतरात्मा की पुकार को सुनेंगे। 27 मार्च को शहीद जय सिंह स्मृति संस्थान जैसलमेर द्वारा आयोजित शहीद जयसिंह जी के 26वें शहीद दिवस कार्यक्रम में को संबोधित करते हुए संघ के संरक्षक माननीय भगवानसिंह जी रोलसाहबसर ने उपरोक्त बत कही। उन्होंने कहा कि शहीद जय सिंह जी निश्चित रूप से भगवान के भक्त थे इसलिए भगवान को प्रिय थे और भगवान के समीप पहुंच गए। देर सवेर हम सबका लक्ष्य है ईश्वर तक पहुंचना और उसके लिए जितना हम प्रयास करेंगे वही हमारा पुरुषार्थ होगा। जब तक भगवान की इच्छा को नहीं जानेंगे तो इस संसार में दुख भोगने के अतिरिक्त कुछ कर नहीं पाएंगे। चाहे हम अफसर बन जाएं, राजनेता बन जाएं, किसान बन जाएं लेकिन जीवन में सुख तभी आएगा जब हम ईश्वर की ओर मुड़ेंगे। हमारे जीवन में यह मोड़ महापुरुषों के सान्निध्य से आ सकता है, सद्साहित्य के अध्ययन से आ सकता है और आत्मचिंतन से आ सकता है।

माननीय संरक्षक महोदय ने कहा कि मैं कोई भाषण देने वाला नेता नहीं हूं। मैं एक स्वयंसेवक हूं जो अपनी सेवा भी करता हूं और अपनी सेवा के साथ-साथ राष्ट्र की सेवा में, समाज की सेवा में लोगों को लगाने का प्रयत्न करता हूं। मैं कोई बहुत बड़ा काम नहीं कर रहा हूं लेकिन ऐसे छोटे-छोटे काम से बड़े-बड़े काम संपन्न हो सकते हैं, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। आप लोगों से मैं यही प्रार्थना करूंगा कि जयंती अवश्य मनाएं लेकिन अपने आप में परिवर्तन लाने का प्रयत्न भी अवश्य करें, अपने अंदर झांक कर के अवश्य देखें। निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता। हमने अपने आप को नहीं बनाया तो हम कितने ही धन्यवाद दे दें, धन्यवाद ले लें, कितना ही स्वागत कर लें, स्वागत करवा लें, रंच मात्र भी कोई अंतर पड़ने वाला नहीं है। एकमात्र रास्ता है अपने भीतर देखो और भीतर भगवान का निवास है। वही सत्य है, शाश्वत है, अमर है उसी से हम भी अमरता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे कार्यक्रमों से हमें यही प्रेरणा लेकर के जाने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम में श्री गोरखनाथ जी मठाधीश ख्याला मठ, श्री त्रिलोकनाथ मठाधीश आसरीमठ, जिला प्रमुख प्रताप सिंह, जयसिंह स्मृति संस्थान के संरक्षक पूर्व विधायक छोटू सिंह, चेयरमैन नगर परिषद जैसलमेर हरि बल्लभ कल्ला , राज्य महिला आयोग सदस्य अंजना मेघवाल, तन सिंह प्रधान पंचायत समिति सम, जनक सिंह प्रधान पंचायत समिति फतेहगढ़, कृष्णा चौधरी प्रधान मोहनगढ़, उमेद सिंह तंवर सहित सैकड़ों समाजबंधुओं ने उपस्थित रहकर शहीद जय सिंह जी को नमन किया।

प्रशासनिक...

पहले यह प्रयास केवल प्रशासनिक सेवाओं के लिए किया जाएगा, कालांतर में अन्य सेवाओं में भी सहयोग की संभावना तलाशेंगे। दूसरा विषय उन्होंने बताया कि हम सब सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं, हमें समाज के विभिन्न विषयों पर चर्चा कर अपनी भूमिका तय करनी चाहिए एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के नेतृत्व के समक्ष तथ्यात्मक सूचनाएं पहुंचानी चाहिए। इसके लिए हमें निरंतर संपर्क, समन्वय व विचार विमर्श की कोई व्यवस्था बनानी चाहिए। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर व विभिन्न राज्यों में हमारे समाज के अनेक अधिकारी मुख्य भूमिका में हैं और इन सबका संपर्क व समन्वय समाज के लिए उपयोगी हो सकता है इसलिए हमें हमारे अधिकारियों की एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करने को लेकर भी विचार करना चाहिए। उपस्थित अधिकारियों में से गौरव बांकावत, सुरेंद्र सिंह, रतनसिंह लुणु, राजकंवर जी, जयपाल सिंह, जी. एस परिहार, दिलीप सिंह, वीरेंद्र सिंह, प्रहलादसिंह, अल्का शेखावत, दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह, अजीत सिंह, वी पी सिंह नरुका आदि ने अपने विचार रखे एवं उपरोक्त विषयों को कैसे लागू किया जा सकता है इस पर अपने सुझाव दिए। पूर्व महानिदेशक मौसम विभाग लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने कहा कि इस बैठक में हम ही वक्ता और हम ही श्रोता हैं। हम ही प्रस्ताव रखने वाले हैं और हम ही उन्हें क्रियान्वित करने वाले हैं इसलिए इन विषयों पर हमें कार्य प्रारंभ करना चाहिए। राष्ट्रीय सेमिनार के लिए मैं अपना सहयोग देने को तत्पर हूँ।

श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने कहा कि ऐसे सभी प्रयासों का सार यही है कि हम अपने पारिवारिक भाव को विस्तार देवें। जिस प्रकार आदर्श परिवार में हर व्यक्ति हर एक के लिए प्रयास करता है वैसे ही हमारा यह पारिवारिक भाव विस्तार पाएगा, हम समाज के लोगों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करने लगेंगे और इससे जिन समस्याओं की हम चर्चा कर रहे हैं उनका हल होने लगेगा और हम सबकी जो चाह है सभी को आगे बढ़ाने की, वह संभव हो सकेगी। उन्होंने कहा कि हम ऐसी बैठकों में अनेक निर्णय लेते हैं और उनमें से अनेक को लागू नहीं कर पाते पर इससे निराश होने की आवश्यकता नहीं है बल्कि बार बार मिलने और निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है और उसी से सब संभव है।

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने इस अवसर पर कहा कि संघ प्रारंभ से ही संस्कार निर्माण में संलग्न है, पू. तनसिंह जी की पीड़ा यह थी कि हमें जिस श्रेष्ठ स्वरूप में जाना जाता था वह खोता जा रहा है और उस ओर बढ़ने का मार्ग उन्होंने संघ के रूप में दिया। प्रारंभ में समाज के सभी वर्गों का सहयोग नहीं मिला पर अब समाज में सर्वत्र संघ की स्वीकृति बढ़ी है, तो साथ ही समाज की अपेक्षाएं भी बढ़ी हैं। संघ का मूल काम शिक्षण का है लेकिन संघ समाज की इन अपेक्षाओं की उपेक्षा भी नहीं कर सकता। आप सब संघ की ताकत हैं इसलिए आपके सबके सहयोग से संघ इन अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करता है। काम बहुत बड़े नहीं होते, आपका छोटा छोटा सहयोग बड़ा काम कर सकता है। आपसे मिलने आने वालों की आप सहृदयता से बात सुन लें तब भी उनको संबल मिल जाता है। समाज का हर व्यक्ति आपके चयन पर प्रसन्न होता है, अखबार में आपका नाम ढूंढता है, गर्व महसूस करता है इसलिए आपसे सहयोग की वह अपेक्षा करता है। आपका हल्का सा सहयोग भी उसको संतुष्टि प्रदान करता है और ऐसा होना ही हमारे इन स्नेहमिलनों की सार्थकता है।

रासलियावास में पेश की सामाजिक सद्भावना की मिसाल

मेड़ता सिटी के पास रासलियावास गांव में राजपूत समाज द्वारा सामाजिक सद्भावना की मिसाल प्रस्तुत की गई। राजपूत समाज के वयोवृद्ध सदस्य 92 वर्षीय रिछपाल सिंह के निधन के पश्चात गंगाप्रसादी के अवसर पर उनके परिजनों द्वारा वाल्मीकि समाज के 35 सदस्यों को आदर सहित अपने घर लाकर उन्हें प्रेम पूर्वक भोजन कराया। माना जाता है कि वाल्मीकि समाज को आदर देने की यह परंपरा रामायण काल में राजा दशरथ के सौवें यज्ञ के दौरान वाल्मीकि दंपति द्वारा मृत गाय को जीवित करने की घटना के बाद से चली आ रही है। सभी ग्रामवासियों द्वारा इस आयोजन की सराहना की गई व इसे आपसी एकजुटता बनाये रखने वाला कदम बताया।

शक्ति सिंह वाला की स्मृति में यज्ञ का आयोजन

गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग में कालियाबीड़ (भावनगर) के तक्षशिला ग्राउंड की मैदानी शाखा के नियमित सदस्य शक्ति सिंह वाला के आकस्मिक निधन पर 3 अप्रैल को शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा यज्ञ कर-के दिवगंत आत्मा को श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान शक्ति सिंह के परिजन, कालियाबीड़ राजपूत समाज के प्रमुख अश्विन सिंह वाघेला और उनके सहयोगी उपस्थित रहे। वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगल सिंह धोलेरा ने यज्ञ संपन्न करवाया।

गायत्री कंवर की ऑल इंडिया प्री वेटरनरी टेस्ट में 11वीं रैंक

नाचना क्षेत्र के अवाय गांव निवासी गायत्री कंवर ने ऑल इंडिया प्री वेटरनरी टेस्ट में अखिल भारतीय स्तर पर 11वां स्थान प्राप्त करके परिजनों को व ग्राम वासियों को गौरवान्वित किया है। गायत्री कंवर के पिता चंद्रपाल सिंह भाटी शिक्षक है।

मूमल शेखावत का एलएलबी तृतीय वर्ष में प्रथम स्थान

नेवरी निवासी मूमल शेखावत पुत्री श्री आनन्द सिंह ने जयपुर के बियानी कॉलेज में एलएलबी तृतीय वर्ष (सत्र 2020-21) में प्रथम स्थान प्राप्त कर-के परिजनों और ग्रामवासियों को गौरवान्वित किया है।

राजकंवर बा धोलेरा का निधन

राजकंवर बा

वरिष्ठ स्वयंसेवक महिपत सिंह धोलेरा की धर्मपत्नी **राजकंवर बा** का देहावसान 27 मार्च को हो गया। इनके तीनों पुत्र योगीराज सिंह, विक्रम सिंह व प्रवीण सिंह भी श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक है। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवगंत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और परिजनों को सम्बल देवें।

तीन दिवसीय जौहर मेला संपन्न

जौहर स्मृति संस्थान द्वारा 26 से 28 मार्च तक चित्तौड़गढ़ में तीन दिवसीय जौहर मेले का आयोजन किया गया। मुख्य समारोह दुर्ग स्थित फतेह प्रकाश मंडल प्रांगण में 28 मार्च को संपन्न हुआ। संस्थान के अध्यक्ष तख्त सिंह फाचर ने बताया कि जौहर श्रद्धांजलि समारोह प्रतिवर्ष मनाया जाता है किंतु कोविड-19 के कारण विगत 2 वर्षों से इसका आयोजन नहीं हो पाया था। स्थिति सामान्य होने पर पुनः आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलवाने तथा हमारे महापुरुषों की पहचान बदलने के कुत्सित प्रयासों को रोकने व ऐसा करने वालों का विरोध करने की भी बात कही। राजस्थान सरकार में मंत्री भंवर सिंह भाटी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि मेवाड़ की धरती का स्वर्णिम इतिहास रहा है। यहां आमजन के लिए हमारे पूर्वजों ने स्वाभिमान की लड़ाई लड़ी। हमारी पहचान हमारे पूर्वजों से ही है, जिन्होंने क्षात्र धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस गौरवशाली इतिहास को हमें हमारी भावी पीढ़ी को बताना है और इसके लिए ऐसे आयोजन होते रहने चाहिए। चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी ने कहा कि इस भूमि को नमन करने

देश व दुनिया के लोग आते हैं क्योंकि यह भूमि महाराणा प्रताप, झाला मान, राव जयमल जी मेड़तिया आदि वीरों के त्याग व बलिदान की भूमि है। संत श्री रामजी राम महाराज ने कहा कि यह महापर्व है। आज सब ओर स्वच्छंदता की पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार-प्रसार है जिसके प्रभाव में हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति को भुलाया जा रहा है। ऐसे आयोजन हमारी सांस्कृतिक चेतना के संरक्षण व उन्नयन में सहायक है। पंजाब के पूर्व राज्यपाल वीपी सिंह बदनोर ने कहा कि आज के दिन हमें हजारों वीरांगनाओं का आशीर्वाद मिलता है जो हमारे भीतर नई ऊर्जा और प्रेरणा पैदा करता है। उन्होंने बताया कि गुरु गोविंद सिंह जी और शिवाजी ने भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए मेवाड़ से ही प्रेरणा प्राप्त की थी। विश्वराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जिस प्रकार संकटों का सामना करते हुए भी मातृभूमि की स्वतंत्रता को बनाए रखा उससे हमें राष्ट्रप्रेम, वीरता, शौर्य, बलिदान, स्वाभिमान, एकजुटता की प्रेरणा मिलती है। हम अच्छे को ग्रहण करें और जो बुरा है उसको छोड़ें, अपने पूर्वजों के रास्ते पर चलें, इसी में हमारी और सब की भलाई हैं। सांसद दिया कुमारी, पूर्व सांसद गोपाल सिंह ईडवा, चित्तौड़गढ़ विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, कुंभलगढ़ विधायक सुरेंद्र सिंह राठौड़ ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान नाहर सिंह जसोल द्वारा लिखित पुस्तक 'काका रा कागदिया' तथा 'शाइनिंग मेवाड़' समाचार पत्र का विमोचन भी किया गया। संस्थान के उपाध्यक्ष शक्ति सिंह मुरलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। डॉ अनीता राठौड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया। समारोह के दौरान 26 मार्च को तीसवीं महाराणा सांगा स्मृति पारंपरिक ग्रामीण एवं जनजाति खेलकूद प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। 27 मार्च को अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 28 मार्च को प्रातः 8:00 बजे महाराणा भूपाल छात्रावास से 1 किलोमीटर लंबी शोभायात्रा भी निकाली गई जिसमें अश्व, हाथी, ऐतिहासिक झांकी एवं पारंपरिक वेशभूषा में समाजबंधु मातृशक्ति सहित सम्मिलित हुए। जौहर स्थली पर यज्ञ का भी आयोजन हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली एवं संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने यज्ञ में सहयोग किया।

भूरटिया पहुंच कर संरक्षक श्री ने पूछी कुशल क्षेम

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसार 10 अप्रैल को बाड़मेर जिले के भूरटिया गांव में वरिष्ठ स्वयंसेवक स्वरूप सिंह जी भुरटिया के निवास पर पहुंचे और उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी ली। स्वरूप सिंह जी विगत लंबे समय से बीमार हैं एवं कहीं आ जा नहीं पा रहे हैं। वरिष्ठ स्वयंसेवक देवी सिंह माडपुरा, राम सिंह माडपुरा, प्रकाश सिंह भुरटिया, कृष्ण सिंह जी राणीगाँव एवं महिपाल सिंह चूली भी साथ में रहे।

फलौदी में प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

फलोदी में राईका बाग क्षेत्र में स्थित परमवीर मेजर शैतान सिंह राजपूत छात्रावास में 8 अप्रैल को क्षत्रिय विकास सेवा समिति फलोदी के तत्वावधान में फलोदी राजपूत समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ जिसमें विभिन्न क्षेत्रों यथा - शिक्षा, समाज सेवा, राजनीति, सरकारी सेवा व मीडिया आदि में उत्कृष्ट कार्य करने वाले समाज जनों का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया और उन्हें और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में समाज के भामाशाहों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न कार्यों के लिए आर्थिक सहयोग देने की घोषणाएं की गई। कार्यक्रम में उपस्थित महंत प्रतापपुरी जी महाराज द्वारा इन भामाशाहों का भी सम्मान किया गया। राजस्थान सरकार

के पूर्व कैबिनेट मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में समाज अधिक से अधिक आगे बढ़े, यह समय की मांग है। तकनीकी एवं कंप्यूटर आधारित शिक्षा में समाज के युवाओं को अधिकाधिक भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। साथ ही बालिका शिक्षा को भी बढ़ावा मिलना चाहिए। हनुमान सिंह खांगटा, करण सिंह उचियारड़ा ने भी अपने विचार रखे और समाज के युवाओं से प्रशासनिक सेवाओं में जाने के लिए कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया। समिति के अध्यक्ष कुंभ सिंह पातावत ने सभी से समाज सेवा के लिए आगे आने का आह्वान किया और कहा कि सभी के द्वारा मिलकर कार्य करने से ही समाज आगे बढ़ेगा। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे।

राजपूत समाज के राजनीतिज्ञों का सम्मान

श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद द्वारा आयोजित राजपूत समाज के राजनीतिक क्षेत्र के महानुभावों का सम्मान समारोह 22 मार्च को साणंद स्थित सोमनाथ पार्टी प्लोट में संपन्न हुआ। इसमें शक्तिसिंह गोहिल सदस्य राज्यसभा, ध्रुव सिंह जी वाघेला ठाकोर साहब साणंद, कीर्तिसिंह वाघेला शिक्षा मंत्री राज्यकक्षा गुजरात सरकार, विश्वनाथसिंह वाघेला प्रदेश अध्यक्ष युथ कांग्रेस गुजरात, जयदीप सिंह वाघेला उद्योगपति, गायत्रीबा वाघेला प्रदेश अध्यक्ष महिला मोर्चा कांग्रेस आदि कि उपस्थित में सरपंच, तहसील पंचायत, जिला पंचायत, नगरपालिका, सहकारी संस्थाओं आदि में विजयी हुए जनप्रतिनिधियों व राजनीतिक पाटीर्यों के संगठन में अहम भूमिका निभाने वाले समाज बंधुओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष जितेन्द्र सिंह जी रेथल ने स्वागत किया। व्यवस्था श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद की टीम ने की।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org